माँ नर्मदा जयंती की शुभकामनाएं

5-6 फरवरी 2022
मूल्य : 10.00 रूपये

मालवा-निमाड़

जाग्रत मालवा

पंजीयन क्रमांक : MPHIN36490
मासिक जागरण पत्रिका

समाज के प्रयास से ही पुन:स्थापित होगी माँ वाग्देवी

माँ वाग्देवी की प्रतिमा आज भी लन्दन संग्रहालय में कैद है।

हिन्दू समाज की यह कैसी विडम्बना है, हम अपने आराध्य की पूजा भी बिना मूर्ति के कर रहे है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

SHAKTI®
PUMPING LIFE

देश का पम्प
शक्ति सोलर पम्प

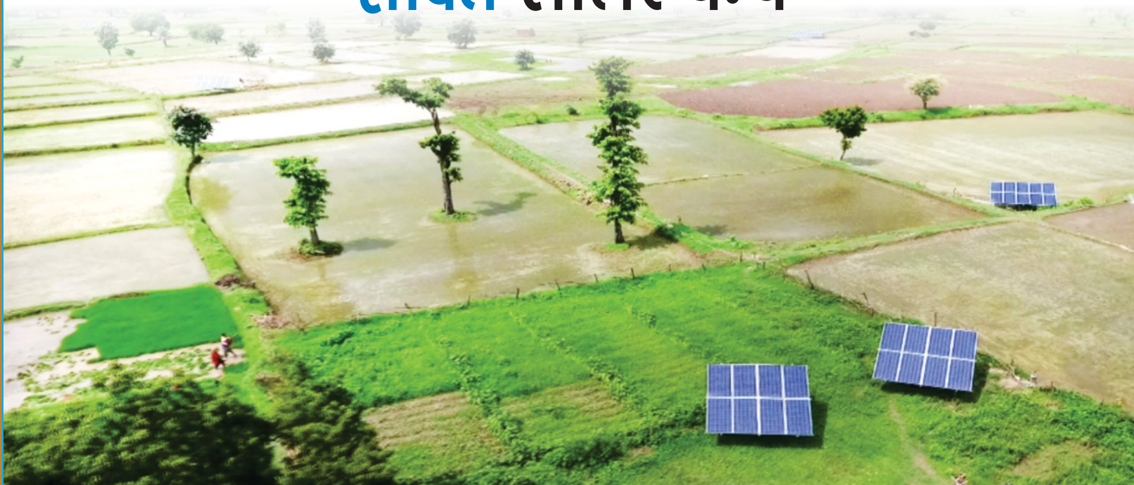

अन्नदाता की समृद्धि और खुशहाली के लिए शक्ति पम्पस् लाएं हैं विश्वस्तर की उच्चतम तकनीक से निर्मित पम्पस् की विशाल रेंज साथ ही सोलर पम्पस्, मोटर्स की विस्तृत श्रृंखला जिससे कृषि एवं सिंचाई संबंधित सारी जरूरतें पूरी होती हैं.

विशेषताएं

- 40% अधिक डिस्चार्ज
- शक्ति स्टेनलेस स्टील पम्पस् एवं मोटर्स उत्कृष्ट फेब्रिकेशन तकनीक द्वारा निर्मित
- डीलर्स एवं सर्विस सेंटर्स का विशाल नेटवर्क
- विश्व की आधुनिकतम मशीनें एवं रोबोट्स द्वारा उत्पादन
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर की मशीनों का उपयोग
- निरंतर नवीनीकरण के लिये योग्य एवं अनुभवी टीम
- 100% स्टेनलेस स्टील से निर्मित

शक्ति पम्पस् (इंडिया) लिमिटेड

सेक्टर - 3, औद्योगिक क्षेत्र, पीथमपुर, जिला-धार (म.प्र.) - इंडिया फोन.: +91-7292-410500
ई-मेल: info@shaktipumps.com, वेब: www.shaktipumps.com. टोल फ्री नं.: 1800 103 5555

EXPORT TO 100 COUNTRIES · US LISTED · STAR EXPORT HOUSE Certificate Holder · India's First 5 Star Rating Pump

जाग्रत मालवा
मासिक जागरण पत्रिका

मासिक जागरण पत्रिका
शीर्षक (टाईटल) पंजीयन MPHIN36496
वर्ष : 01 अंक : 07

पौष- माघ
युगाब्द ५१२३

प्रधान संपादक
देवकृष्ण व्यास
संपादक
अरुण सपकाले
संपादक मंडल
डॉ. सुब्रतो गुहा
डॉ. सोनाली नरगुन्दे
डॉ. रत्नदीप निगम
डॉ. उत्तम मीणा
अशोक वर्मा

मुख्य कार्यालय
जाग्रत मालवा
जी-1, केसरदीप एवेन्यू
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.)
पिन कोड : 452007
फोन : 0731-3551341

Email :
jagrutmalwa@gmail.com
jagrutmalwa

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र
मुद्रक एवं प्रकाशक - दिनेश गुप्ता
संपादक - अरुण सपकाले
72, नारायण बाग, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित एवं मुद्रांकण ऑफसेट, पोलोग्राउण्ड, इन्दौर द्वारा मुद्रित

अपनी बात

ॐ

हम सभी भारतवासी परम सौभाग्यशाली हैं कि हमने पुण्यभूमि भारत, कर्मभूमि भारत, धर्मभूमि भारत में जन्म लिया। अखिल विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ सभी ऋतुएं होती हैं। ऋतुओं का राजा जिसे हम ऋतुराज बंसत कहते हैं वह सिर्फ भारत में ही होता है। इसी ऋतु में माँ वसुन्धरा श्रृंगार करती है, मन ही नहीं आत्मा भी प्रफुल्लित हो जाती है। ज्ञान की देवी माँ सरस्वती के जन्मोत्सव के रूप में हम बसन्तोत्सव मनाते हैं।

बंसत पंचमी के दिन ही माँ वाग्देवी, माँ सरस्वती की पूजा बड़ी श्रध्दा से की जाती है, धार भोजशाला में इस दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु पूरे भारत से आते हैं और पूजा अर्चना करते हैं और यहाँ लगने वाले मेले के कारण उत्सव उत्साहपूर्ण हो जाता है। धार भोजशाला का आन्दोलन माँ वाग्देवी की प्रतिमा लन्दन स्थित संग्रहालय से लाने के लिए और भोजशाला में हिन्दू समाज निर्विघ्न रूप से पूजा कर सके इस हेतु भी है जिसमें स्थानीय समाज का प्रबल समर्थन है। धार भोजशाला उत्सव समिति इसके लिए प्रयासरत है।

पवित्र नदियां भी हम सभी के पाप नष्ट कर हमारी प्यास बुझाती हैं। सप्त पवित्र नदियों में एक हैं माँ नर्मदा जो हमारे मालवा और निमाड़ की जीवन रेखा है, नर्मदा जयंती भी इसी माह में है। विश्व में माँ नर्मदा ही ऐसी पावन पवित्र नदी है जिसकी परिक्रमा की जाती है। नर्मदा के पावन पट पर वेद और पुराणों की रचना हमारे ऋषि मुनियों ने की है। माँ नर्मदा के दर्शन मात्र से पुण्य फल प्राप्त होता है।

संत शिरोमणि रविदास जी महाराज समरसता के संत हैं। मीराबाई ने जिन्हें अपने गुरू के रूप में स्वीकार किया जिनके पद **"प्रभुजी तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी"** आज भी जन-जन गाता है।

हिन्दवी स्वराज की स्थापना करने वाले वीर शिवाजी का जन्म दिवस है। मुगलों के आतंक से लड़ने का और विजयी होने का विश्वास हमें शिवाजी महाराज ने ही दिलाया था, उनका स्मरण होते ही हमारा स्वाभिमान जागृत हो जाता है। और मन बोल उठता है **जय शिवाजी-जय भवानी।**

हमारे पूज्य के वचनों को हम आत्मसात करें और उन्हें अपने कर्मों से फलीभूत करें ऐसा विश्वास है। सभी पर्वों की मंगलमय शुभकामनाएं

चरणों में शीश धर, दोनों हाथ जोड़कर
भावना के पुष्प हम चढ़ाएं माई शारदे
रस बरसा दे ऐसा, भींग जाएं हम सब
अपनी वीणा के जरा तार झंकार दे।

धार भोजशाला आन्दोलन संघर्ष से विजय तक

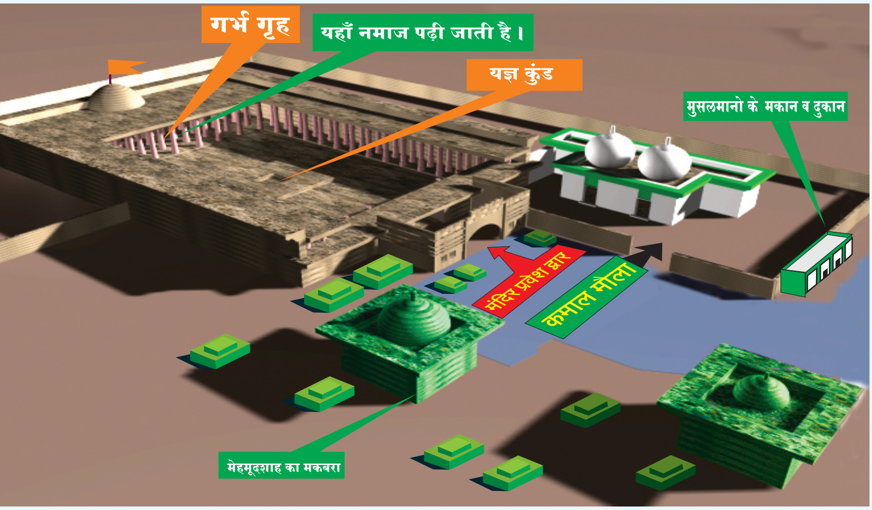

इंदौर से मात्र 65 कि.मी. दूर धार नगरी में स्थित है भोजशाला। मां सरस्वती की प्रतिमा को अंग्रेजों के समय यहां से चुराकर लंदन स्थित संग्रहालय में रख दिया गया। जिसे वापस लाने के लिए व जहां प्रतिमा स्थापित थी उस भोजशाला को जो कि वर्तमान में चारों तरफ से मस्जिद, कब्रगाह आदि से घिरी हुई है को मुक्त करवाने के प्रयास किये जा रहे है। यह हिंदू समाज की विडम्बना है कि उन्हें अपनी आराध्य मां वाग्देवी की पूजा उनकी मूर्ति के बिना ही करना पड़ रही है। देखें क्या है भोजशला का इतिहास-

उद्भव व वास्तु - सन् 1034 में परमार शासक कुलभूषण, वरदपुत्र, महाज्ञानी महाराजा भोज ने ज्ञान की साधना और माँ सरस्वती की आराधना के लिए माँ सरस्वती मंदिर 'भोजशाला' का निर्माण करवाया। यह नालंदा, तक्षशिला की तरह एक विशाल आवासीय संस्कृत विश्वविद्यालय था। सैकड़ों अलंकृत लाल पाषाण स्तंभों पर आधारित सभाभवन के शिखर पर देवी देवताओं की मूर्तियाँ शोभायमान थीं। स्तंभों पर उत्कीर्ण (खुदे हुए) नागबंध जो व्याकरण के सूत्र और प्रत्ययमाला को प्रदर्शित करते हैं, आज भी देखे जा सकते हैं। इन स्तम्भों तथा छत के पत्थरों पर घंटी, शंख, चक्र और गदा तथा देवी प्रतिमाएँ बनीं हैं। गर्भगृह के शिखर के आंतरिक भाग में बने अष्टदल कमल हिन्दू स्थापत्य के प्रमाण हैं। भवन के उत्तर व दक्षिण दीवारों पर जालीदार खिड़कियों के बीच देवी देवताओं की मूर्तियाँ उकेरी गईं। काले पत्थर के पाषाण शिलालेखों में से दो 1. राजा भोज रचित कूर्मशतक तथा 2. कवि मदन रचित परिजात मंजरी आज भी प्रवेशद्वार से अंदर बांयी ओर संरक्षित हैं। भवन के मध्य में विशाल यज्ञकुण्ड है जिसमें सन् 1035 में अनेक राजाओं की उपस्थिति में चालीस दिवसीय हवन के साथ ही मंदिर के गर्भगृह में मूर्तिकार मनथल द्वारा मकराना संगमरमर की गढ़ी माँ सरस्वती की अप्रतिम व सुंदर प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा बसंत पंचमी के दिन की गई थी। स्थापना से लगातार 271 वर्षों तक भोजशाला ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र बनी रही।

पराभव- सन् 1269 में अरब मूल के कमाल मौलाना का योजनाबद्ध तरीके से धार आकर बसना हआ। इसके 36 वर्ष बाद सन् 1305 में अलाउद्दीन खिलजी ने परमारों के अभेद्य माने जाने वाले मालवा पर आक्रमण कर इस्लामी राज्य की स्थापना की और भोजशाला सहित अनेक मानबिन्दुओं को ध्वस्त किया। सन् 1401 में दिलावर खां गोरी ने मालवा पर अपना राज्य घोषित कर विजय मंदिर (सूर्य मार्तण्ड मंदिर) को नष्ट व भ्रष्ट किया। सन् 1514 में मेहमूदशाह खिलजी द्वितीय ने आक्रमण कर भोजशाला को मस्जिद में परिवर्तित करने का प्रयत्न किया। इसी ने कमाल मौलाना की याद में भोजशाला के बाहर एक मकबरा कमाल मौलाना की मृत्यु के 204 वर्षों बाद बनवाया। विदित हो कि कमाल मौलाना की मृत्यु सन् 1310 में अहमदाबाद में हुई थी और वहीं पर इसकी दरगाह बनी हुई है!

संघर्ष - प्रथम आक्रमण के समय भोजशाला के 1400 प्रकाण्ड विद्वानों ने संघर्ष कर अपनी आहुति दी। सन् 1305 में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय तत्कालीन राजा महलकदेव और गोगादेव ने युद्ध करते हुए वीरगति प्राप्त की।

मेहमूद खिलजी के आक्रमण के समय राजपूत सरदार मेदिनीराय ने वनवासियों की सेना बनाकर विद्रोह किया। अंग्रेजों के शासनकाल में सन 1875 में भोपावर का पोलिटिकल एजेंट मेजर किनकैड ने **भोजशाला में खुदाई करवाकर मुगल आक्रमणकारियों द्वारा खण्डित कर जमीन में गाड़ दी गई वाग्देवी (माँ सरस्वती) की प्रतिमा को बाहर निकाला। सन् 1905 में तत्कालीन गर्वनर जनरल लॉर्ड कर्जन धार आया और वाग्देवी (माँ सरस्वती) की प्रतिमा को लंदन ले गया। जो आज भी ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में कैद है!** सन् 1935 में मुसलमानों ने तत्कालीन दीवान नाडकर से नमाज के लिए भोजशाला में जगह मांगी। सन् 1952 में धार के हिन्दू समाज ने महाराजा भोज बसंतोत्सव समिति के नेतृत्व में प्रत्येक बसंत पंचमी पर धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर जनजागरण प्रारंभ किया। धार के हिन्दू समाज द्वारा ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में कैद वाग्देवी (माँ सरस्वती) की प्रतिमा को पुनः भोजशाला लाने हेतु ज्ञापनों के माध्यम से सतत प्रयत्न चलते रहे। **सन् 1961 में सुप्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता एवं इतिहासकार पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर ने स्वयं लंदन जाकर प्रमाणित किया कि वह प्रतिमा धार की भोजशाला की वाग्देवी (माँ सरस्वती) की प्रतिमा ही है।** किंतु 12 मई सन् 1997 को तत्कालीन मुख्यमंत्री ने एक आदेश जारी कर इस मंदिर में हिन्दुओं के प्रवेश पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाया और साथ ही केवल बसंत पंचमी पर सशर्त प्रवेश व पूजन तो दूसरी ओर मुसलमानों को वर्षभर प्रति शुक्रवार नमाज की अनुमति दे दी।

अपमानित हिन्दू समाज ने भोज उत्सव समिति के नेतृत्व में प्रति मंगलवार भोजशाला के बाहर सड़क पर सत्याग्रह प्रारंभ किया जिसमें सैकड़ों लोग हनुमान चालीसा और सरस्वती वंदना के लिये एकत्रित होने लगे । हिन्दू समाज के स्वाभिमान जागरण के साथ सत्याग्रह में और प्रतिवर्ष बसंत पंचमी पर हिन्दुओं की संख्या बढ़ती गयी। सन् 2000 में हिन्दू जागरण मंच और उसके नेतृत्व में संपूर्ण धार जिले में व्यापक जन जागरण प्रारंभ हुआ। हजारों की संख्या में हिन्दू श्रृद्धालुओं ने बसंत पंचमी पर आयोजित अनुष्ठानों में सहभागिता की । मुस्लिम तुष्टिकरण के तहत शासन प्रशासन के अड़ियलपन से व्यथित हिन्दू समाज द्वारा 6 फरवरी 2003 को विशाल धर्म रक्षक संगम आयोजन किया गया, जिसमें धार जिले के एक लाख से भी अधिक हिन्दू धर्मरक्षक सम्मिलित हुये। उन्होंने 18 फरवरी तक भोजशाला को प्रतिबंध से मुक्त करने की चेतावनी शासन को दी और ऐसा न होने पर हिन्दू समाज द्वारा अपने सामर्थ्य पर भोजशाला को मुक्त कराने की घोषणा की। 18 फरवरी को भोजशाला में पूजन हेतु बढ़ रहे हजारों हिन्दू महिला-पुरूष श्रद्धालुओं पर पुलिस द्वारा लाठीचार्ज के साथ ही गोली चालन हुआ फलस्वरूप संपूर्ण जिले का हिन्दू समाज आकोशित हुआ । 19 फरवरी को संपूर्ण धार जिले में आन्दोलन हुआ। सतत आन्दोलन, सत्याग्रह चलता रहा।

विजय - देश के इतिहास में पहली बार हिन्दुओं ने अपने सामर्थ्य पर 8 अप्रैल 2003 को ऐतिहासिक विजय प्राप्त की । 698 वर्षों बाद केन्द्र सरकार ने भोजशाला में प्रतिदिन दर्शन एवं प्रति मंगलवार अक्षत- पुष्प लेकर जाने की सशर्त अनुमति दी। संपूर्ण जिले में 8 अप्रैल को घर-घर दीप प्रज्जवलित कर मंदिरों में महाआरती कर विजय उत्सव मनाया गया । 20 जनवरी 2004 को वाग्देवी मां सरस्वती की लंदन संग्राहलय की कैद से मुक्ति एवं भोजशाला में प्राण प्रतिष्ठा के संकल्प को साकार करने हेतु माँ शारदा शक्तिपीठ मेहर से अखंड ज्योति मां सरस्वती मंदिर भोजशाला में लायी गयी जो आज अखंड ज्योति मंदिर के रूप में मोतीबाग चौक में स्थापित है। हालांकि 2003 से चली आ रही प्रतिदिन दर्शन एवं प्रति मगंलवार अक्षत पुष्प ले जाने की अनुमति एवं प्रत्येक बसंत पंचमी को सम्पूर्ण दिवस यज्ञ एवं पूजन की अनुमति है लेकिन जिस वर्ष बसंत पचंमी और शुक्रवार एक ही दिन आते है उस दिन हिन्दू समाज को कुछ घंटे प्रवेश नहीं दिया जाता है एवं उसके यज्ञ एवं पूजा में बाधा आती है। ऐसा अवसर 3-4 वर्ष में एक बार आता है और हिन्दू समाज को अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है। अतः इसका स्थाई समाधान निकालना आवश्यक है।अभी तक के सभी ऐतिहासिक और पुरातात्विक साक्ष्य इस बात को प्रमाणित करते है कि वह सम्पूर्ण परिसर प्राचीन भोजशाला मंदिर ही है। भारत सरकार के भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग द्वारा सम्पूर्ण परिसर का पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं शोध कर तथा साथ ही ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर इस संम्पूर्ण वास्तु को मां वाग्देवी सरस्वती का भोजशाला मंदिर घोषित करना चाहिए ताकि हिन्दू समाज का पूजा का धार्मिक अधिकार अक्षुण बना रहें। - **भोजशाला उत्सव समिति, धार**

जिनके पद को गुरुग्रंथ साहेब में मिला स्थान ऐसे हैं संत शिरोमणि रविदासजी महान

वर्णाश्रम अभिमान तजि,
पद रज बंदहिजासु की।
सन्देह-ग्रन्थि खण्डन-निपन,
बानि विमुल रैदास की।।

आज भी सन्त रैदास के उपदेश समाज के कल्याण तथा उत्थान के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। अपने आचरण तथा व्यवहार से यह प्रमाणित कर दिया है कि मनुष्य अपने जन्म तथा व्यवसाय के आधार पर महान नहीं होता है। विचारों की श्रेष्ठता, समाज के हित की भावना से प्रेरित कार्य तथा सद्व्यवहार जैसे गुण ही मनुष्य को महान बनाने में सहायक होते हैं। इन्हीं गुणों के कारण सन्त रैदास को अपने समय के समाज में अत्यधिक सम्मान मिला और इसी कारण आज भी लोग इन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हैं। रैदास के 40 पद गुरु ग्रन्थ साहब में मिलते हैं जिसका सम्पादन गुरु अर्जुन सिंह देव ने 16 वीं सदी में किया था।

गुरू रविदास (रैदास) का जन्म काशी में माघ पूर्णिमा दिन रविवार को संवत 1433 को हुआ था। उनके जन्म के बारे में एक दोहा प्रचलित है। **चौदह से तैंतीस कि माघ सुदी पन्दरास। दुखियों के कल्याण हित प्रगटे श्री रविदास।** उनके पिता रग्घु तथा माता का नाम घुरविनिया था। उनकी पत्नी का नाम लोना बताया जाता है। संत रविदासजी ने साधु-सन्तों की संगति से पर्याप्त व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया था। वे जूते बनाने का काम किया करते थे और अपना काम पूरी लगन तथा परिश्रम से करते थे और समय से काम को पूरा करने पर बहुत ध्यान देते थे। संत रामानन्द के शिष्य बनकर उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान अर्जित किया। संत रविदासजी ने वाराणसी गंगा घाट के पूज्य संत स्वामी रामानंदजी को कबीर साहेबजी के कहने पर गुरु बनाया था, जबकि उनके वास्तविक आध्यात्मिक गुरु कबीर साहेब जी ही थे। उनकी समयानुपालन की प्रवृत्ति तथा मधुर व्यवहार के कारण उनके सम्पर्क में आने वाले लोग भी बहुत प्रसन्न रहते थे। प्रारम्भ से ही रविदास जी बहुत परोपकारी तथा दयालु थे और दूसरों की सहायता करना उनका स्वभाव बन गया था। साधु-सन्तों की सहायता करने में उनको विशेष आनन्द मिलता था। वे उन्हें प्रायः मूल्य लिये बिना जूते भेंट कर दिया करते थे। उनके स्वभाव के कारण उनके माता-पिता उनसे अप्रसन्न रहते थे। कुछ समय बाद उन्होंने संत रविदासजी तथा उनकी पत्नी को अपने घर से अलग कर दिया था। संत रविदासजी पड़ोस में ही अपने लिए एक अलग झोपड़ी बनाकर तत्परता से जूते बनाने का काम करते थे और शेष समय ईश्वर-भजन तथा साधु-सन्तों के सत्संग में व्यतीत करते थे।

एक पर्व के अवसर पर पड़ोस के लोग गंगा-स्नान के लिए जा रहे थे। संत रविदासजी के शिष्यों में से एक ने उनसे भी चलने का आग्रह किया तो वे बोले, गंगा-स्नान के लिए मैं अवश्य चलता किन्तु गंगा स्नान के लिए जाने पर मन यहाँ लगा रहेगा तो पुण्य कैसे प्राप्त होगा? मन जो काम करने के लिए अन्तकरण से तैयार हो वही काम करना उचित है। मन सही है तो इसे कठौते के जल में ही गंगास्नान का पुण्य प्राप्त हो सकता है।

- मन चंगा तो कठौती में गंगा।

संत रविदासजी ने ऊँच-नीच की भावना तथा ईश्वर-भक्ति के नाम पर किये जाने वाले विवाद को सारहीन तथा निरर्थक बताया और सबको परस्पर मिलजुल कर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। वे स्वयं मधुर तथा भक्तिपूर्ण भजनों की रचना करते थे और उन्हें भाव-विभोर होकर सुनाते थे। उनका विश्वास था कि राम, कृष्ण, राघव आदि सब एक ही परमेश्वर के विविध नाम हैं। वेद, कुरान, पुराण आदि ग्रन्थों में एक ही परमेश्वर का गुणगान किया गया है।

करीम, राम, हरि, राघव, जब लग एक न पेखा।
वेद कतेब कुरान, पुरानन, सहज एक नहिं देखा।।
चारों वेद के करे खंडौती।
जन रैदास करे दंडौती।।

भारत ऋषि मुनियों का, साधु संतों का देश है यहां के जन-जन में इनका ज्ञान स्थानीय बोलियों और लोककहावतों में गीतों में गाया जाता है, जिनके हर वाक्य में मानव जगत के सुधार की बातें कही जाती है जिनके स्मरण से हम अपना जीवन चरितार्थ करते हैं ऐसे संत शिरोमणि रविदास जी के अमृत वचनों को आत्मसात कर हम अपना जीवन कृतार्थ करें।

पुण्यसलिला हैं- माँ नर्मदा

श्री दुर्गेश साध, साहित्यकार

माघ मास शुक्ल पक्ष की सप्तमी को पुण्यसलिला माँ नर्मदा मैया का धरती पर अवतरण हुआ था। इसी दिवस को हम सब इसे 'नर्मदा जयंती' के रूप में मनाते हैं। भारत की प्रमुख धार्मिक नदियों में माँ नर्मदा का स्थान अन्यतम है। नर्मदा मैया को एक अन्य नाम, 'रेवा' से भी जाना जाता है। माता नर्मदा को प्राप्त अनेक दिव्य वरदानों में से एक यह वरदान है कि उसका हर कंकर, हर पत्थर पार्थिव शिवलिंग के तुल्य होता है। देश-विदेश में अधिकांश मंदिरों के शिवलिंग इसी नदी के हैं। माँ नर्मदा से प्राप्त शिवलिंग को प्राण-प्रतिष्ठा की भी आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि वे स्व-प्रतिष्ठित होते हैं।

ऐसा भी माना जाता है कि स्वयं गंगा मैया वर्ष में एक बार माँ नर्मदा में स्नान करने आती हैं, इसलिए यहां किए जाने वाले दाह संस्कारों के बाद अस्थियों को गंगा में प्रवाहित करने की भी आवश्यकता नहीं होती। माता नर्मदा के महत्व का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि नदियों में पुराण, केवल 'नर्मदा पुराण' के रूप में उपलब्ध है, अन्य किसी भी नदी को यह सौभाग्य प्राप्त नहीं है। मध्य प्रदेश में ब्राह्मणों की एक जाति भी नर्मदा के किनारे बसे होने के कारण 'नार्मदीय' कहलाती है। किसी और नदी के नाम पर ऐसा नामकरण अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता। अन्य नदियों में तो स्नान के बाद ही पाप धुलते हैं, मगर माँ रेवा को यह वरदान प्राप्त है कि इनका दर्शन-मात्र ही पुण्यकारक होता है।

माँ नर्मदा को जब भी चित्रात्मक रूप में अभिव्यक्त किया जाता है तो आपने ध्यान दिया होगा कि माता के चेहरे पर सदैव एक अलौकिक स्मित होता है। इसका कारण स्वयं माता के नाम में ही छिपा है। **नर्म + दा; 'नर्म' से तात्पर्य - हर्ष या हास्य से है एवं 'दा' यानी दात्री। अतः माँ नर्मदा हर्ष-प्रदात्री हैं।** पुराणों के अनुसार स्वयं भगवान शिव ने देवताओं के पापों को धोने के लिए माँ नर्मदा को प्रकट किया था। कथाओं के अनुसार एक बार देवताओं से अंधकासुर नामक राक्षस से युद्ध के दौरान कई पाप हुए, जिसके निवारण के लिए वे देवगण विष्णु भगवान एवं ब्रह्मा जी समेत भगवान शिव के पास गए। तब भगवान शंकर ने मैकाल पर्वत पर माँ नर्मदा को उत्पन्न किया।

यह विंध्याचल और सतपुड़ा पर्वत श्रेणियों में मध्य प्रदेश के अमरकंटक नामक स्थान से निकलती है। यह भारत की एकमात्र ऐसी नदी है जो कि पूर्व से पश्चिम एवं निचले स्तर से उच्च स्तर की ओर बहती है। इसके अलावा परिक्रमा करने का भी विधान भी केवल माँ नर्मदा का ही है। यह नदी मध्यप्रदेश के अलावा छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र एवं गुजरात से गुजरकर अंत में खंभात की खाड़ी में प्रवाहित होकर विलीन होती है।

माँ नर्मदा जयंती के उपलक्ष्य में हर वर्ष देश भर में अनेकों धार्मिक आयोजन होते हैं। ये आयोजन अधिकांशतः नर्मदा के तटीय क्षेत्रों में होते हैं। अमरकंटक एवं ओंकारेश्वर के आयोजन विशेष रूप से उल्लेखनीय होते हैं। इस दिन स्नान एवं दान का आत्यधिक महत्व है। माँ नर्मदा में स्नान करने से व्यक्ति सभी संकट एवं व्याधियों से मुक्त हो जाता है।

भारत एक नदियों का देश है और हमने हर नदी को अपनी मां माना है क्योंकि वह जीवनदायनी है। जल के बिना हमारे जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती क्योंकि मनुष्य शरीर में 71 प्रतिशत जल है। यही दर्शन हमें स्वार्थ से परमार्थ की ओर उन्मुख करता है। बढ़ते औद्योगीकरण ने नदियों को सर्वाधिक प्रदूषित किया है। इस अवसर पर हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम मां समान नदियों को सदैव आदर करें एवं उन्हें साफ एवं स्वच्छ रखने के लिए सदा प्रयत्नशील हों।

त्वदीय पाद पंकजं, नमामि देवी नर्मदे!

छत्रपति शिवाजी महाराज

श्री अमितराव पवार

छत्रपति शिवाजी के हिंदवी साम्राज्य में सभी सम्प्रदायों का होता था सम्मान - अतीत स्वयं प्रमाण है कि जो लोग अपने इतिहास से सबक नहीं सीखते, अपने पूर्वजों का सम्मान नहीं करते, अपने नायकों पर गर्व नहीं करते वह अपना आत्म- सम्मान व गौरव दोनों खोकर पतन के मार्ग पर चल पड़ते हैं। कुछ व्यक्ति अपने राष्ट्र, अपने समाज व वंश के कारण प्रसिद्धि पाते हैं किंतु कुछ अपने वंश, समाज और राष्ट्र की यश कीर्ति बढ़ा देते हैं। मुगलों को लोहे के चने चबवाने वाले हिंदवी साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज ऐसे ही व्यक्ति हैं जो अपने भौंसले वंश, हिन्दू समाज और भारतवर्ष की प्रसिद्धि का कारण बने। 19 फरवरी 1630 ई. में पवित्र भारत भूमि (पूना) के शिवनेरी किले में श्री छत्रपति महाराज शिवाजीराव भोंसले ने माता जीजाबाई के कोख से जन्म लिया। इनके पिता श्री शाहजीराव भोसले थे।

युग प्रवर्तक श्री छत्रपति शिवाजी महाराज का नाम किसी भी भारतीय के लिए अपरिचित नहीं है। जिस समय समस्त भारतवर्ष मुसलमानों एवं मुगलों की सत्ता के अधीन हो चुका था तब स्वतंत्र हिंदू राज्य की स्थापना करके इतिहास में एक सर्वथा नवीन अध्याय की रचना की। अपनी मातृभूमि, धर्म, संस्कृति, राष्ट्र आदि के प्रति परम आस्थावान होते हुए भी वे अन्य सभी संप्रदायों के प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखते थे, इनके नेतृत्व में साम्प्रदायिक तथा जातीय भेदभाव के लिए कोई स्थान नहीं था और सच्चे अर्थो में वह धर्म का राज्य था। छत्रपति शिवाजी मुस्लिम विरोधी नहीं थे वास्तव में वह मुस्लिम शासकों द्वारा किए गए घृणित और वीभत्स कृत्यों के विरोधी थे। शिवाजी ने सभी सम्प्रदायों को अपनी आस्था के अनुरूप पूजा पाठ एवं जीवनयापन करने की खुली छूट दी और स्वयं भी गैर हिंदुओं के बलात् धर्मांतरण का विरोध किया। शिवाजी के राज्य में जिस प्रकार हिन्दू मंदिर सुरक्षित थे उसी प्रकार मस्जिदों-मकबरों एवं चर्चों की सुरक्षा की भी व्यवस्था की जाती थी। गैर हिन्दू महिलाओं को भी हिन्दू मातृशक्ति के समान ही पूरा सम्मान दिया जाता था।

औरंगजेब इतना क्रूर शासक था कि उसने राज्य के लिए अपने भाइयों की हत्या कर दी और अपने पिता शाहजहाँ को कारागार में डाल दिया। और हिंदुओं पर तरह-तरह के अत्याचार कर उन्हें बलात् मुसलमान बनाना शुरू कर दिया। वास्तव में शिवाजी इस जिहादी पैशाचिक वृत्ति के घोर विरोधी थे और इसीलिए विदेशी आक्रमणकारियों को अपना पूर्वज मानने वाले और देश मे फर्जी विमर्श स्थापित करने वालों ने शिवाजी की छवि को धूमिल करने का प्रयास किया है।

30 मार्च 1645 के शुभ दिन शिवाजी महाराज ने स्वतंत्र हिंदवी साम्राज्य की स्थापना करने का संकल्प लिया। इस संकल्प को लेने के बाद उन्होंने अपनी शासकीय मोहर चलाई इस मुद्रा पर लिखे हुए आदर्श वाक्य –**'शाह के पुत्र श्री छत्रपति शिवाजी महाराज की यह मुद्रा कल्याण के लिए प्रकाशमान है जो चंद्रमा की प्रथम कला के समान नित्य बढ़ने वाली है और विश्व इसका सम्मान करने वाला है।'** समाज में ऐसी दृढ़ मान्यता है कि छत्रपति शिवाजी महाराज को प्रत्यक्ष माता श्री तुलजाभवानी से आशीर्वाद प्राप्त था। भवानी के आशीर्वाद से ही उन्होंने अनेक रियासतें ओर दुर्ग विजय किए तथा भारत में हिन्दुओं का एक स्वतंत्र राज्य स्थापित किया। आखिरकार वह दिवस आ गया जिसकी हिन्दू समाज को दशकों प्रतीक्षा थी। लम्बे संघर्ष के बाद 6 जून 1674 ई. में रायगढ़ के दुर्ग में स्वतंत्र शासक के रूप में हिन्दू रक्षक शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक किया गया और उन्हें 'छत्रपति' की उपाधि प्रदान की गई। शिवाजी महाराज अप्रतिम साहस और असीमित ध्येय की प्रतिमूर्ति थे। एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर वह भारत के भाग्य विधाता और हिन्दुओं के दुखहंता बने उन्होंने सिद्ध किया कि- सिंह का ना तो कोई अभिषेक करता है और न ही कोई अन्य संस्कार ही। वह अपने बल पर ही वनराज की पदवी प्राप्त करता है। उनकी वीरता, रणनीति और युद्ध कौशल से मुगल भी परिचित थे। **स्वयं औरंगजेब ने कहा था 'शिवाजी ही एक ऐसा व्यक्ति, जिसने नवीन राज्य निर्माण की महत्वता प्रदर्शित की, जबकि मैं प्राचीन राज्यों को नष्ट करने का प्रयत्न करता हूं। वह एक महान सेना नायक था। मेरी सेनाओं का प्रयोग उसके विरुद्ध उन्नीस वर्षों तक होता रहा तो भी उसका राज्य बढ़ता रहा।'** राज्य-राष्ट्र की उन्नति उसके शासकों की योग्यता पर ही निर्भर है। देवत्व श्री छत्रपति शिवाजी महाराज समूचे भारत और भारतीयों में बसे हैं चाहे वह किसी भी धर्म या सांस्कृतिक मूल के लोग हो। वास्तव में उनमें ऐसे गुण थे जो भारत के वर्तमान राजनेताओं में होना चाहिए। उनके सपनों का भारत निर्माण करने में अपनी छोटी-बड़ी भूमिका सुनिश्चित करना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

माँ नरमदा का तो दरसन करने से ज पाप खतम हुई जाय...

नारायणी माया बदेका

नमामि माँ नर्मदे
पुण्या कनखले गंगा कुरुक्षेत्रे सरस्वती।
ग्रामे वा यदि वारण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा!
नर्मदा संगम यावद् यावच्चामरकण्टकम्।
तत्रान्तरे महाराज तीर्थकोट्यो दश स्थिताः!

नरमदा,नरबदा, नर्मदे, नर्मदा, रेवा सतत कलकल सलिला का पावन नाम है। माघ शुक्ल सप्तमी तिथि को दन माँ नरमदा की जयंती का रूप में मनायो जाय। माँ नर्मदा मध्य प्रदेश की जीवन रेखा यूं ज नी केवाय। ऐसी मानता है के दिव्य कन्या नरमदा काशी का पंचकोसी मे दस हजार वरस तक तपस्या करी ने भगवान शिव पासे ऐसा वरदान पाया के जो दूसरा तीरथ के नदी कने नी है। ऐसो बोलयो जाये की गंगा में नहाया बाद पाप छूटे पण नरमदा का तो दरसन करने से ज पाप खतम हुई जाय। माँ नरमदा से निकलया हर पाषाण नर्मदेश्वर रूप में पूजया जाय, उनकी प्राण-प्रतिष्ठा बिना उनके पूजन स्थल पे विराजित करी सकाय। श्रीगणेश, कार्तिकेय, श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान, ऋषि मुनि ने नरमदा किनारे तपस्या करी के सिद्धी ली। देहधारी सतगुरु से दीक्षा लय के नरमदा के किनारे तपस्या करने पर ज भगवान शिव की कृपा मिले ऐसो वरदान भी माँ नरमदा के मिलयो।

जेसो के पुराण धरम ग्रंथ में माँ नरमदा के बारा में बतायो गयो वेसो लोककथा में भी बतायो गयो की माँ नरमदा मैखल राजा की कन्या है। इको उद्गम स्थल भी मैखल परबत से हुओ। अपणी बेटी नरमदा जिके रेवा भी बोलयो जाय उका ब्याव का स्वयंवर की उनने शरत राखी की जो राजकुमार गुलबकावली को फूल लावे उ म्हारी बेटी नरमदा से परणी सके। सोनभद्र उ फूल लय आया, उनको ब्याव निश्चित हुओ। ब्याव का थोड़ा दन पेला नरमदा ने अपणी दासी जुहिला के साथे राजकुमार सोनभद्र का लिए संदेश भेजयो। नरमदा, सोनभद्र ने एक दूसरा के देखयो नी थो, जुहिला राजकुमारी का कपड़ा गेहना पेरी के अय थी तो सोनभद्र भी उके राजकुमारी समझी गया, दासी जुहिला ने भी सच नी बतायो। अंतरंग प्रेम में वी बखत को भान भूलया। जादा दिन बितया तो नरमदा देखवा आया तो दासी जुहिला ने सोनभद्र के साथे देखी ने उलटा पगे पाछा फिरी गया। जिका बाद नरमदा जी चिर कुंवारी रया। गुस्सा का कारण नरमदा सोनभद्र से अलग हुआ।

नरमदा ज ऐसी नदी जो उलटी दिशा में वय री। ऐसी और भी कय मानता है। जो माँ नरमदा का रूप को अलग अलग बखान करे। विशेष परब पे माँ गंगा भी इनको स्पर्श करने आये। नरमदा माँ की महिमा वेद पुराण ने बखाणी। नरमदा नदी की परिक्रमा यात्रा भी होय। नरमदा की पंचकोसी यात्रा होय ने नरमदा परिक्रमा यात्रा होय। उज्जैन, ऊँकारेश्वर, अमरकंटक से यात्रा निकले। पग पग यात्री गण नरमदे हर को उच्चार करता जाय। हम भागशाली हां, जो हमारे पास नरमदा माँ है। नदी पाणी पुस्तक में लिखाय वखणाय उससे जादा उनमें जीवन बचयो रे वी कलकल करती रे यो मन में ठानी लेनो। हमारी संस्कृति हमारी धरोहर है हमारा संस्कार है हमारी पिचान है। नदी की सुरक्षा करनो हमारो कर्तव्य है। आगे हम अपनी पीढ़ी के भारत की धरोहर सौंपी सका ऐसो हमारो काम होनो चयये।

इंडिया गेट और राष्ट्रीय समर स्मारक के बीच खाली खड़ी इस छतरी में सन् 60 तक जॉर्ज पंचम का बुत होता था जिसे हटा कर बुराड़ी के कोरोनेशन पार्क में भेज दिया गया था तभी से यह स्थान खाली था, प्रधानमंत्री मोदी ने आज इस स्थान पर ग्रेनाइट से बना नेताजी सुभाष चंद्र बोस का स्टेचू लगवाकर नेताजी के 125 वें जन्मदिवस पर देश की तरफ से सभी राष्ट्रभक्तों को एक भेंट दी है.

निमाड़ी कविता
नमन मां शारदे नमन मंच

ओमप्रकाश कुशवाह, धामनोद

अमरकंटक सी निकली माय रेवा,
कल कल शब्द सुनावती जाय।
टेड़ी मेड़ी चाल सुवाणी,
सहस्त्रधारा लइं न ह्य तू बहती जाय।
शिव जी मानस बेटी का निर्मल जल मह्य,
साधु संत रया लोठी।
महेश्वर मह्य देवी अहिल्या बाई का,
घाट की महिमा छे मोटी।
साधु सन्त थारी निर्मल धारा का,
दर्शन कर ह्य सबका दुख हरती जाय।
अमरकंटक सी निकली माय रेवा
कल कल शब्द सुनावती जाय।
सारा जगत की एक छे,
जो पूरब सी निकली माय रेवा।
जगत को पाप ताप हरण वाली,
साधु संत कर ह्य थारी सेवा।
माय रेवा पूरब सी पश्चिम दिशा म ह्य, वयती वयती जाय।
अमरकंटक सी निकली माय रेवा
कल कल शब्द सुनावती जाय।
थारा किनारा कई छे, माय सिद्धेश्वर योगेश्वर ।
थारा तट का हर कंकर शंकर छे,
ओंमकारे स्वर ममलेश्वर। सारो कुटुंब थारा खोलाम,
वको भार सयती सयती जाय।
अमरकंटक सी निकली माय रेवा
कल कल शब्द सुनावती जाय।
संत महंत महामंडलेश्वर, थारी करी रया परिक्रमा।
भक्त संत नको जीवन सुफल हुयो, करी न ह्यथारी परिक्रमा।
म्हारी भी इच्छा छे थारी परिक्रमा करनह्य की,
हर पल याद सतावती जाय।
अमरकंटक सी निकली माय रेवा
कल कल शब्द सुनावती जाय।

बड़ा होना ही जरुरी नहीं समाज के लिए उपयोगी होना जरुरी...

एक बार एक व्यक्ति के जेब में दो हजार का नोट (2000/-) एवं एक रूपये का सिक्का एक साथ हो गये।
सिक्का अभीभूत होकर दो हजार के नोट को देखे जा रहा था...
नोट ने पूछा-इतने ध्यान से क्या देख रहे हो ?

सिक्के ने कहा - आप जैसे इतने बड़े मूल्यवान से कभी मिला नहीं इसलिए ऐसे देख रहा हूँ, आप जन्म से अभी तक कितना घूमे फिरे होंगे ? आपका मूल्य हमसे हजारों गुना ज्यादा है आप कितने लोगों के उपयोगी हुए होगे?
नोट ने दुखी होकर कहा - तुम जैसा सोचते हो ऐसा कुछ भी नहीं है। मै एक उद्योगपति की तिजोरी मे कई दिनों तक कैद था। एक दिन उसने टैक्स चोरी से बचने के लिए घूस के रुप में मुझे एक अधिकारी के हवाले कर दिया। मैंने सोचा चलो कैद से छूटे।अब तो किसी के उपयोगी होंगे पर उसने तो मुझे बैंक लॉकर मे ही कैद कर दिया। महीनों बाद अधिकारी ने बंगला खरीदने में, हमें बिल्डर के हाथों में सौंप दिया। उसने हमें एक बोरे मे बांधकर एक अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया। वहां तो हमारा श्वांस फूलने लगा और तड़फता रहा। किसी तरह अभी कुछ दिन पहले मैं इस व्यक्ति के जेब में पहुंचा हूँ। सही बताऊं तो,पूरी जिन्दगी जेल में कैद की तरह रहा।

नोट ने अपनी बात पूरी कर सिक्के से पूछा, दोस्त तू बता जन्म से अब तक कहां कहां घूमा फिरा, किससे किससे मिले? सिक्का ने घबड़ाते-घबड़ाते कहा-दोस्त..मैं,अपनी क्या बात कहूँ? एक जगह से दूसरी जगह तीसरी चौथी बस सतत घूमते-फिरते ही रहे !
कभी भिखारी के कटोरे से बिस्कुट वाले के पास, तो कभी बच्चों के पास से चाकलेट वाले के पास, पवित्र नदियों मे नहा कर, तीर्थ स्थल में तीर्थ कर आए वहां प्रभु चरणों में जगह मिली तो कभी आरती की थाली में बच्चों के साथ झूला भी झूले और सब जगह घूमे और खूब मजा किया और जिसके भी पास गए, सबको मजा करा रहा हूँ... सिक्के की बात सुनकर, नोट की आँखें भर आई। आप कितने बड़े हो ये महत्व नहीं रखता महत्वपूर्ण यह कि है कि- आप कितने उपयोगी हो। - **संकलन निखिल घोलप**

जैविक खाद

किसान भाई, जैविक खाद की पूर्ति गोबरखाद, हरीखाद केंचुआ (वर्मा कम्पोस्ट) खाद, तरल जैव घोल के साथ ही ''जीवाम्रत'' बनाकर की जा सकती है।

गोबर खाद - अच्छे सड़े हुए पके हुए गोबर के खाद में 1 से 1.5 प्रतिशत नाइट्रोजन 1-2 प्रतिशत फोस्फोरस तथा 1-1.5 प्रतिशत तक पोटाश पाया जाता है। इसकी मात्रा खेत में 10-15 टन प्रति हैक्टेयर दी जानी चाहिये। किसान के पास जो भी उपलब्ध हो वह देकर शेष तत्वों की पूर्ति रासायनिक खाद से करो गोबर खाद जल धारण क्षमता बढ़ती है। मृद्रा स्ट्रक्चर में सुधार होता है।

हरीखाद - हरीखाद मूंग, लोबिया, सनई ढेंचा से दी जाती है। इन फसलों को उगाकर फूल आने पर मिट्टी पलटने वाले हल से पलटकर मिट्टी में दबा देने से वह सड़कर खाद बन जाते हैं।

केंचुआ खाद - सुविधानुसार 10×5, 7.5×5 या 5×5 फिट आकार के चौरस शेड ईंटों से बनाकर उनमें केंचुए पाले जाते है। अतः शेड को गोबर से भर देते हैं। डेढ़ से 2 माह में केंचुआ समूह गोबर को खा खाकर चाय पत्ती जैसा बारीक कर देते हैं, तब उस पदार्थ को छानकर बोरी में भरकर एकत्र कर लो। बाद में फलों के पौधों एवं सब्जियों में पौधे की उम्र अनुसार 4-6 मग या मुठ्ठी भरकर देकर खुरपी से मिला दें।

तरल जैव घोल - इफको, कृमको, एनएफएल आदि फर्टिलाइजर निर्माता कंपनियां पी.एस.बी. 12:32:16 जैविक तथा अन्य कल्चर के साथ ही सागरिका आदि केन्द्रों से व समितियों से विक्रय करती हैं। इनको पानी में (1 लीटर में 100 लीटर पानी) घोलकर स्प्रे कर दें।

जीवामृत बनाकर - जीवमृत बनाने हेतु एक 200 लीटर के ड्रम में 10 किलो गोबर 10 लीटर (गोमूत्र 1.5 किलो बेसन, 1.5 किलो गुड़ तथा 1-2 किलो खेत की मिट्टी डालकर पानी से मिलाकर (गलने तक) रखें)। ड्रम को 7-8 दिनों तक लकड़ी से 5 मिनिट रोज छड़ी की दिशा में हिलाएं।

मैंने स्वयं अनेक बार बनाकर ड्रिप द्वारा फूल के पौधे में दिया है जबरदस्त लाभ हुआ है। मैंने उक्त सभी के अलावा सरसों की खली भी 1 कि.लो प्रति ड्रम डाली थी। वेस्ट डिकम्पोस्ट भी निकाले जीवामृत ड्रिप न हो तो बलिय्यों (1-2) से भी दे सकते हैं। यह शीघ्र 8-10 दिनों में तैयार करके दिया जा सकता है। अतः किसान भाईयों उपरोक्त में से कोई भी पसंद अनुसार सुविधा अनुसार खेत में पौधों में डालकर लाभ लें।

जैविक-कीटनाशक - जैविक कीट नाशक अनेक पदार्थों को मिलाकर बना सकते हैं जैसे-

1. नीम पत्ती व निम्बोली को उबालकर पानी को आधा हो जाने तक उबालकर , छानकर बोतल में भरकर रख लें। स्प्रे पम्म में 100-125 मि.ली. डालकर स्प्रे करे कीड़े मर जायेंगे।
2. नीम-निम्बोली के साथ ही करंज की पत्तियां डालकर उबालकर भी बना लें। उसमें कुछ पत्तियां जर्दे की भी डाल दें। बन जाने पर स्प्रे करें।
3. गौ-मूत्र - ताजा गाय का मूत्र 100 लीटर से 125 लीटर प्रति टंकी डालकर स्प्रे करें, लाभ होगा।
4. नीम, सीताफल, करंज, धतूरा, आइपोमिया, (बेशरम) अरंडी सभी- पौधों के पत्तों में कीटनाशक गुण होता है। अतः किसान भाई उपलब्धता अनुसार पत्तों को उबालकर कीटनाशक बना लें। 100-125 लीटर (कीड़ों संख्या अनुसार गाड़ा) प्रति टंकी डालकर स्प्रे करें निश्चित ही कीड़े मरेंगे।
5. नीम पत्ती, करंज पत्ती के साथ जर्दा-चूना (1 चम्मच) तथा सड़ी छाछ (तांबे या पीतल के बर्तन में 1-2 दिन रखकर) डालकर भी कीनाशक बनाकर स्प्रे करने पर फायदा हुआ है।

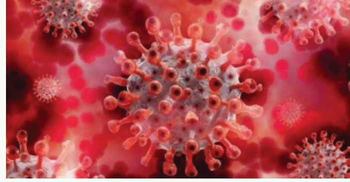

वैक्सीनेशन देगा ऑमिक्रान से भी सुरक्षा

निवेदिता सक्सेना

शरीरमाघन खलु धर्मसाधनम।। - उपनिषद
अर्थात् - शरीर को सेहतमंद बनाये रखना जरूरी है इसी के होने से सभी का होना है अतः शरीर की रक्षा और उसे निरोगी रखना मनुष्य का सर्वप्रथम कर्तव्य है। वेदों में भी पहला सुख निरोगी काया को ही कहा गया है। जीवन के किसी भी मोड़ पर यदि काया ही साथ ना दे तो सब निरर्थक है।

राष्ट्र का निर्माण जन जन की भागीदारी से ही सम्भव हैं । जब तक हम सभी एक जुट होकर किसी विकट समस्या के प्रति जागरूक नहीं होंगे तब तक उस समस्या से निपटना संभव नहीं, देश के प्रत्येक नागरिक का सर्वमूल कर्तव्य है कि देशहित के निर्णय का समर्थन करे और कराए, इसी से एक स्वस्थ व सक्षम राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

हाल ही में फिर से चौंका देने वाला कोरोना वायरस का नया म्युटेंट मिला जो बीटा व डेल्टा से भी ज्यादा तीव्र संक्रमण क्षमता के साथ आया है। वर्तमान में इस वायरस से निपटने के पूर्ण प्रयास जारी है । वहीं ये भी पाया गया कि दूसरे लॉकडाउन के अनलॉक के बाद लोगों में सावधानी व सतर्कता का अभाव देखने में आया जैसे मास्क, सोशल डिस्टनसिंग, वैक्सीन के दूसरे डोज में लापरवाही।

टीका या वैक्सीन- सक्रिय प्रतिरक्षा या एक्टिव इम्युनिटी को प्रेरित करने के उद्देश्य से शरीर मे सन्निविष्ट कराए जाने वाले जैविक पदार्थ टीका या वैक्सीन कहलाता है जो कई व्याधियों की रोकथाम में किफायती तरीका है। वैक्सीन जहां शरीर के प्रतिरक्षा तंत्र को अंदर से मजबूत करता है वही शरीर के अंदर अगर कोई पैथोजन मौजूद है तो उसे भी कमजोर करता है जैसा कि कई प्रमाण इससे सम्बन्धित आये हैं कि कई लोग जो एलर्जी पीड़ित थे उन्हें भी कोरोना वैक्सीन के बाद राहत मिली ।

ये समझना आवश्यक है कि सीधे श्वसन तंत्र पर प्रहार करने वाला ये विषाणु अब म्यूटेंट या उत्परिवर्तित रूप में सामने आ रहा हैं जो पहले आये बीटा व डेल्टा वेरिएंट से ज्यादा शक्तिशाली रूप में हमारे सामने आ रहा हैं जिसमें पचास से ज्यादा म्युटेशन व तीस परिवर्तन पाए गए है जिसमे दो मुख्य प्रकार M679K व P681H पाए गए हैं और इनके स्पाइक प्रोटीन में भी काफी बदलाव मिले हैं। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होगी तो निश्चित तौर पर कोरोना का नया सदस्य ऑमिक्रान तो क्या, कोई भी सूक्ष्मजीव आक्रमण कर सकता है।

हालांकि ग्रामीण स्तर हो या शहरी अभी भी लोगों के मन में कई प्रश्न व वहम कोरोना टिके को लेकर जारी है जिसमे कई शिक्षित लोग भी मौजूद हैं ऐसे में जागरूकता के अभाव में ऑमिक्रान को सीधा आमंत्रण होगा।

इम्यून सिस्टम -शरीर में सभी प्रकार के रोगाणुओं और प्रतिजनों के दुष्प्रभावों का प्रतिरोध करके समस्थैतिकता बनाये रखने की क्षमता होती है, इसे शरीर की प्रतिरक्षा कहते हैं। प्रतिरक्षा हेतु मानव में एक प्रतिरक्षा तंत्र मौजूद किया जाता है। जो दो प्रकार से होता है स्वाभाविक व उपार्जित। स्वाभाविक प्रतिरक्षा, जो प्राकृतिक व जन्मजात होता है व उपार्जित प्रतिरक्षा व्यक्ति के जीवन काल में किसी रोगजनक अथवा किसी विशिष्ट प्रतिजन के विरुध्द अर्जित की जाती है। शरीर का प्रतिरक्षा तंत्र लिम्फोसाइट के माध्यम से कार्य करती है लिम्फोसाइट भी दो प्रकार के होते है टी-लिम्फोसाइट व बी-लम्फोसाइट जो थाइमस ग्रंथि व अस्थिमज्जा से परिपक्व होता है। ऐसे में उपार्जित प्रतिरक्षा तंत्र को कोरोना टीके के द्वारा काफी हद तक मजबूत किया जा सकता है।

एक ओर दुष्प्रचार सुनने में आया कि कई लोग मानते हैं कि वह मांसाहारी है उनमें बहुत प्रोटीन मौजूद है अतः वायरस उनपर असर नहीं करेगा। उन्हें ये समझना होगा स्वाभाविक प्रतिरक्षा तंत्र के साथ उपार्जित को सशक्त बनाना है। पहला वैक्सीन लगवाने के बाद दूसरा वैक्सीन लगवाना उतना ही आवश्यक है जितना सुबह के भोजन के बाद शाम का भोजन होता है, जैसे सुबह का भोजन हमें शाम तक ठीक तरीके से सशक्त नहीं रख सकता ओर हमें शाम को भोजन की जरूरत हो ही जाती है उसी प्रकार पहली वैक्सीन तब तक कारगर सिद्ध नहीं हो सकती जब तक दूसरी ना लगवाई जाए ।

जीवन बड़ा है अनमोल, तो कर ले संकल्प इस ओर,
करना है कोरोना को दूर, तो कर ले कोरोना डोज को पूर्ण।

यह प्रत्येक भारतीय की जिम्मेदारी है कि टीकाकरण में सहयोग कर स्वस्थ व सक्षम भारत का निर्माण करे।

स्वराज अमृत महोत्सव पर भारत माता पूजन कार्यक्रम से मालवा हुआ सराबोर

स्वतंत्रता के 75 वर्ष पुरे होने के अवसर पर देश में अमृत महोत्सव कार्यक्रम मनाना प्रारम्भ हो गया है, स्वराज के अमृत महोत्सव का उद्देश्य हैं कि स्वतन्त्रता के नायको का जीवन सभी देशवासियों तक पहुंचे, ताकि देश उनके जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ सकें ,सम्पूर्ण देश में अमृत महोत्सव के अंतर्गत बहुत से कार्यक्रम आयोजित किए जा रहें हैं, वस्तुतः अमृत महोत्सव गणतन्त्र दिवस से प्रारम्भ हो गया हैं जो स्वतन्त्रता दिवस तक चलने वाला हैं ।

मालवा प्रांत (इंदौर, उज्जैन सम्भाग) में भी स्वराज के अमृत महोत्सव की तैयारियां के साथ कार्यक्रम होना शुरू हो गए है। स्वराज अमृत महोत्सव आयोजन समिति द्वारा समाज क्षेत्र में सक्रिय बन्धु -भगिनियों का वक्ताओं के रूप में चयन किया गया, जिन्हें इंदौर व उज्जैन में संभागवार प्रशिक्षण दिया गया। इंदौर में प्रशिक्षण रविन्द्र नाट्यगृह तथा उज्जैन में विक्रम कीर्ति मंदिर में दिया गया, इंदौर व उज्जैन में आयोजित इन वक्ता प्रशिक्षण वर्ग में प्रखर वक्ता, लेखक व प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय समन्वयक जे.नंदकुमार जी का वक्ताओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। जे नंदकुमार जी ने भारत के 'स्व' का जागरण, भारत का स्वतन्त्रता संग्राम के विषय में महत्वपूर्ण व अप्रकाशित जानकारियाँ वक्ताओं को दी, साथ ही मालवा क्षेत्र की सहभागिता स्वतन्त्रता संग्राम में क्या रही इस विषय में भी बताया, जे. नंदकुमार जी ने वक्तव्य के महत्व, सावधानियां और छोटी -छोटी किन्तु महत्व की बातें वक्ताओं को ध्यान दिलाई।

ओंकारेश्वर में मोटर साईकल से निकाली तिरंगा यात्रा

स्वराज के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव आयोजन समिति ओंकारेश्वर द्वारा 26 जनवरी को तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा यात्रा ग्राम भोगांव पुनर्वास से प्रारंभ होकर ग्राम भोगांव, ओंकारेश्वर , कोठी, धावड़िया, अनजनरूद, घोसली होते हुए ग्राम सुलगांव पहुंची। जगह-जगह पर ग्रामीण जनों ने यात्रा का स्वागत फुल मालाओं से किया।

स्वराज 75 अमृत महोत्सव के कार्यक्रमों से हुआ पूरे खंडवा में हुआ देशभक्ति का वातावरण

स्वराज 75 अमृत महोत्सव जिला समिति खडंवा द्वारा 26 जनवरी से स्वराज 75 अभियान के शुभारंभ अवसर पर नगर में 118 स्थानों पर आयोजन संपन्न हुए। 83 स्थानों पर वक्ताओं ने छोटी बड़ी सभाओं में विषय प्रतिपादन भी किया। अभियान में विविध संगठनों की सहभागिता रही।

क्या जिस जगह में मुस्लिम बहुल हो जाते हैं वहां से हिंदुओं को भागना पड़ता है पहले कैराना अब सुराना

जिस तरह उत्तर प्रदेश का कैराना क्षेत्र मुस्लिम समुदाय की प्रताड़ना के कारण हिंदुओं के पलायन को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में आया था, ठीक वैसी ही स्थिति अब मध्य प्रदेश के रतलाम जिले के गांव सुराना में बन रही थी। इस गांव में रह रहे हिंदू समुदाय के लोग मुस्लिम समुदाय के लोगों की धमकियों और प्रताड़नाओं से भयभीत थे। इन्होंने कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपकर कहा कि यदि हमारी मदद नहीं की गई तो हम तीन दिन में अपना घर, खेत, संपत्ति आदि छोड़कर गांव से पलायन के लिए तैयार हैं। डरे-सहमे हिंदू ग्रामीणों का कहना है कि गांव की कुल आबादी 2200 है, जिसमें 60 प्रतिशत मुस्लिम व 40 प्रतिशत हिंदू हैं। रतलाम कलेक्टर इस मामले में बुधवार को सुबह 11 बजे गांव का दौरा करने पहुंचे।

सुराना गांव रतलाम जिला मुख्यालय से करीब 13 किमी दूर बिलपांक थाना अंतर्गत स्थित है। इस गांव में इन दिनों बहुत तनाव है। गांव में रहने वाले हिंदू समुदाय के लोग रतलाम कलेक्टर आफिस पहुंचे और एसडीएम अभिषेक गेहलोत को ज्ञापन सौंप कर अपनी पीड़ा बताई। ग्रामीण दशरथ, मुकेश जाट, भरतलाल जाट आदि ने बताया कि यहां हिंदू-मुसलमान कई पीढ़ियों से साथ रह रहे थे, लेकिन बीते दो-तीन वर्षों में यहां के मुस्लिम लोग न जाने किन बाहरी मुल्ला-मौलवियों के बहकावे में आकर गांव में हिंदू युवाओं के साथ गाली-गलौज, मारपीट व धमकाने जैसी घटनाएं कर रहे हैं। जिसमें हमेशा हिंदू युवाओं पर ही झूठी एफआइआर दर्ज हुई है। यहां गांव की गलियों, चबूतरों और चौराहों पर बैठे लोग आपस में बातें करते नजर आते हैं, लेकिन उनके बीच दूरी, अविश्वास और असुरक्षा की भावना साफ दिखाई देती है।

आए दिन देते हैं धमकी- पीड़ित ग्रामीणों के मुताबिक गांव में संख्याबल में अधिक होने के कारण मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा हिंदुओं को आए दिन डराया-धमकाया जाता है। पुलिस को सूचना देते हैं तो कार्रवाई के नाम पर बेवजह परेशान किया जाता है। पिछले दिनों हुए विवाद को लेकर एसपी से मिले तो सुनवाई के बजाय हमें ही घर तोड़ने, रासुका लगाने की धमकी दे दी गई। अब हमें इस गांव में नहीं रहना। तीन दिन में गांव खाली कर देंगे। प्रशासन हमें अन्य स्थान पर जमीन के पट्टे दे दे, जिससे हम सुरक्षित व शांतिपूर्वक रह सकें। बीते एक साल से दोनों पक्षों के बीच हो रहे विवादों की वजह से माहौल बिगड़ता चला गया। पिछले साल दो बार बड़े विवाद के मामले दर्ज हो चुके हैं। इसके बाद एसपी गौरव तिवारी ने शांति समिति की बैठक लेकर दोनों वर्गों के लोगों से चर्चा की थी। कई लोगों को बाउंडओवर भी किया गया था।

रतलाम के जिस सुराना गाँव से पिछले दिनों हिन्दुओं के पलायन की खबर आयी थी, उसी गाँव में अधिवक्ता परिषद ने लगाया 'न्याय शिविर'

'अधिवक्ता परिषद मालवा प्रान्त' द्वारा आज न्याय शिविर का आयोजन रतलाम जिले के 'सुराना' ग्राम में आयोजित किया गया । कुछ दिन पूर्व ही सुराना में हिन्दुओं द्वारा पलायन की घटना प्रकाश में आई थी, उसी को दृष्टिगत रखते हुए अधिवक्ता परिषद मालवा प्रान्त द्वारा चिंतन किया गया। उक्त शिविर में 70-80 ग्रामीण उपस्थित हुए और प्रांत पदाधिकारियों के साथ रतलाम अधिवक्ता परिषद की जिला इकाई के पदाधिकारी भी उपस्थित हुए। शिविर में ग्रामीणों द्वारा ग्राम 'सुराना' में हिन्दू धर्म के विरुद्ध चल रही अनैतिक गतिविधियो के संबंध में प्रान्त के पदाधिकारियों को अवगत कराया गया, प्रान्त पदाधिकारियों द्वारा भी ग्रामीणों को उनके संवैधानिक अधिकारों की जानकारी दी एवं उनकी समस्याओं का समाधान किया गया और भविष्य में होने वाली किसी भी समस्या के लिए अधिवक्ता परिषद मालवा प्रान्त द्वारा निशुल्क कानूनी सहायता उपलब्ध कराने के लिए ग्रामीणों को आश्वस्त किया।

अरबाज ने विशाल बनकर 10 वीं की छात्रा से इंस्टाग्राम पर की दोस्ती, शादी के बहाने हरसूद से बुलाकर किया गैंग रेप

खंडवा के हरसूद में 10वीं की छात्रा से अरबाज ने विशाल बनकर इंस्टाग्राम पर दोस्ती की। दोस्ती प्यार में बदल गई। अरबाज ने उसे शादी के लिए बुलाया। शादी की आस लिए जब छात्रा शादी का लाल जोड़ा और गहने लेकर हरसूद से भागकर खंडवा आई। अरबाज ने अपने दोस्त सादिक के साथ सरकारी भवन में बंधक बनाकर गैंगरेप किया। आपत्तिजनक वीडियो और फोटो भी मोबाइल से खींचे। अरबाज ने धर्म परिवर्तन करने का दबाव भी बनाया। घटना के बाद 16 साल की नाबालिग मंगलवार शाम को पुराने बस स्टैंड पहुंची। वहां बैठकर रोने लगी। कोतवाली पुलिस टीम सूचना पर मौके पर पहुंची और उसे थाने लेकर आई। उन्होंने जब उससे रोने का कारण पूछा तो गैंगरेप का मामला सामने आया। उसने कोतवाली पुलिस को बताया कि मेरी तीन माह पहले इंस्टाग्राम पर विशाल नामक युवक से दोस्ती हुई। शादी का झांसा देकर उसने खंडवा बुलाया। छात्रा ने कहा- मैं सोमवार रात को शादी का जोड़ा और ज्वेलरी लेकर घर से निकली। उसके बाद खंडवा पहुंची। यहां जब मैं विशाल से मिली तो पता चला कि उसका असली नाम अरबाज खान निवासी खानशाहवली है। उसने मुझे सादिक की मदद से कलेक्टर बंगले के पीछे सरकारी भवन में ठहराया।

शादी का जोड़ा और गहने पुलिस ने कब्जे में लिए - छात्रा के बेग से लाल जोड़ा और ज्वेलरी मिली है। उसके परिजन को घटना की जानकारी दी गई है। कोतवाली के अलावा मोघट रोड पुलिस भी जांच में जुट गई। अरबाज की गिरफ्तारी के लिए रात को ही खानशाहवली इलाके में सर्चिंग अभियान छेड़ दिया। सादिक को हिरासत में ले लिया गया है। जांच में पता चला कि सादिक नगर निगम का कर्मचारी है जो दैनिक वेतन भोगी है। अरबाज और सादिक दोस्त हैं। सादिक ने ही उसे शासकीय भवन की चाबी उपलब्ध करवाई थी। मुख्य आरोपी फिलहाल फरार है।

ताला लगाकर किया कैद, दोस्त से करवाया दुष्कर्म - पीड़िता ने बताया कि अरबाज ने यह भी कहा था कि तुम धर्म परिवर्तन कर लो। उसके बाद उनके धर्म के रीति-रिवाज से वह शादी करेगा। यह बात वह सिर्फ पीड़िता को विश्वास में लेने के लिए करता रहा। उसके बाद अरबाज ने अपने दोस्त सादिक को भी वहां बुलाया। उन्होंने छात्रा के आपत्तिजनक फोटो और वीडियो को वायरल करने की धमकी दी। फिर सादिक ने भी दुष्कर्म किया। दोनों आरोपियों ने छात्रा को भवन के बाहर ताला लगाकर उसे कैद करके रखा।

आगे की जांच हरसूद पुलिस करेगी - हमें घटना की जानकारी मिली थी। पीड़िता को हम थाने लेकर आए हैं। पीड़िता ने हमें आपबीती बताई। हरसूद पुलिस को घटना की सूचना दी है। देर रात हरसूद पुलिस कोतवाली पहुंची। आगे की कार्रवाई हरसूद पुलिस ही करेगी। **- बलजीत सिंह बिसेन, कोतवाली टीआई**

हिन्दू संस्कृति उत्सव समिति, मन्दसौर की सक्रियता से शिवना नदी की गंदगी हुई साफ

शिवना को प्रदूषण मुक्त करवाने के लिए बार बार प्रयास करने पर नगरपालिका द्वारा परिणामकारी कार्य नहीं करने पर हमारी समिति द्वारा 181 पर शिकायत के बाद हलचल प्रारंभ हुई।

नगर पालिका ने 99 करोड़ का एक प्रोजेक्ट पहले बनाया उसमे समय लग रहा था और वह अब शासकीय प्रकिया के बाद अंतिम निर्णय में है। इसके पहले एक और प्रोजेक्ट जिसमें नाले के गंदे पानी को फिल्टर कर साफ पानी शिवना नदी में प्रवाहित किया जाएगा। उक्त दोनों कार्य की फाईल और शासकीय कार्यवाही पत्र अवलोकन हेतु नगर पालिका हमें बुलाया और कहाँ आप 181 शिकायत वापस लो। हम इतना कार्य कर चुके हैं। समिति ने कहा प्रोजेक्ट में लंबा समय लगेगा उसके पहले आपके पास जो संसाधन है उनसे जब तक जलकुंभी साफ नहीं हो जाती मंदिर के पास नदी के किनारे साफ नही हो जाते 181 शिकायत नहीं उठेगी। तत्पश्चात नगरपालिका ने कार्य प्रारंभ कर दिया - जो नाला 2 साल से नहीं बन रहा था वह 3 घंटे में बनकर पूर्ण। शिवना किनारों के आसपास की जंगली झाड़ियों के हटाने का कार्य प्रारंभ। नगरपालिका द्वारा बुलवाकर स्थल निरीक्षण करवाया।

वामपंथियों के गढ़ केरल में फिल्म मेप्पडियन बनी हिन्दुत्व की भावना के प्रकटीकरण का माध्यम

'उन्नी मुकुन्दन अभिनीत **'मेप्पडियन'** को हाल ही में अब्रहमिक/ कौमी बिरादरी द्वारा इसलिए आलोचना के घेरे में लाया जा रहा है, क्योंकि एक दृश्य में एम्बुलेंस सेवा भारती की है (जो आरएसएस से संबंधित एनजीओ है) इसका मुख्य अभिनेता एक धर्मनिष्ठ हिन्दू है, और किसी भी दृश्य में सनातनियों और उनकी संस्कृति का अपमान नहीं किया गया है। खलनायक हिन्दू नहीं है। यह एक ऐसी फिल्म है, जिसपर सब गर्व कर सकें! स्वयं उन्नी मुकुन्दन ने इस संबंध में वार्तालाप करते हुए बताया कि उन्हें नहीं समझ में आता कि आखिर किस बात की आपत्ति लोगों को 'सेवा भारती' से हो सकती है। उन्नी के अनुसार, 'यह संगठन सेवा के लिए प्रसिद्ध है, और उनके एम्बुलेंस का उपयोग हमने अपनी फिल्म के लिए किया। हर चीज को राजनीति से जोड़ना नहीं चाहिए।' उन्होंने आगे ये भी कहा कि अगर किसी को उनके भगवान हनुमान जी की मूर्ति के साथ फोटो खिंचवाने से आपत्ति है तो हुआ करे, वो उनके आराध्य हैं और वो उन्हें शक्ति प्रदान करते हैं।

लेकिन यह शुभ रीति केवल मलयालम फिल्मों तक ही सीमित नहीं है। कुछ ही माह पूर्व तेलुगु में सुपरस्टार नंदमुरी बालकृष्ण ने 'अखंडा' को प्रदर्शित किया, जिसने बॉक्स ऑफिस पर 125 करोड़ से भी अधिक की कमाई की। इसने न केवल भगवान शिव को नमन किया, अपितु सनातन संस्कृति का भी सम्मान किया।

इसी भांति तमिल उद्योग में मोहन जी क्षत्रियन द्वारा निर्देशित 'रुद्र तांडवम्' में ईसाई माफिया और तमिलनाडु पीसीआर एक्ट के दुरुपयोग पर प्रकाश डाला गया। ऋषि रिचर्ड और गौतम वासुदेव मेनन प्रमुख भूमिकाओं में थे, असल में 'रुद्र तांडवम्' का मूल विषय है तमिलनाडु पीसीआर एक्ट यानि नागरिक सुरक्षा अधिकार अधिनियम का दुरुपयोग, जिसके अंतर्गत उच्च जातियों के विरुद्ध कई दशकों से पक्षपाती निर्णय लिए गए हैं।

यह अपने आप में एससी/ एसटी एक्ट का राजकीय वर्जन है, जिसका फायदा ईसाई धर्मांतरण माफिया ने काफी उठाया है, पर इसके दुरुपयोग पर कोई भी प्रकाश नहीं डालता। 'रुद्र तांडवम्' ने न केवल इस विषय पर प्रकाश डाला है, अपितु ईसाई धर्मांतरण माफिया को कठघरे में खड़ा भी किया है। यही नहीं, 'रुद्र तांडवम्' ने ईसाई माफिया द्वारा प्रायोजित ड्रग माफिया पर भी उंगली उठाई है। 'रुद्र तांडवम्', जिसे जनता का भरपूर प्रेम मिला। ऐसे में मलयाली फिल्म 'मेप्पडियन' को मिल रहा जनता का समर्थन ये स्पष्ट दर्शाता है कि हवा का रुख अब बदल रहा है, अब वामपंथी चाहकर भी हिन्दू विरोधी नहीं हो सकते और ऐसा किया तो वामपंथी भारतीय सिनेमा के लिए इतिहास हो जाएंगे।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की लौ में विलीन हुई अमर जवान ज्योति

इंडिया गेट पर स्थित अमर जवान ज्योति का शुक्रवार को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की **लौ** के साथ विलय कर दिया गया। एक संक्षिप्त समारोह में अमर जवान ज्योति से प्रज्वलित अग्नि का एक हिस्सा लेकर इंडिया गेट से कुछ ही मीटर दूर स्थित राष्ट्रीय युद्ध स्मारक (एनडब्ल्यूएम) में जल रही लौ के साथ विलीन कर दिया गया। एकीकृत रक्षा प्रमुख एयर मार्शल बीआर कृष्णा ने समारोह की अध्यक्षता की।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का निर्माण 1947 में देश की आजादी के बाद से अब तक बलिदान देने वाले 26,466 भारतीय जवानों के सम्मान में किया गया है। 25 फरवरी, 2019 को प्रधानमंत्री ने स्मारक का उद्घाटन किया था।

हिंदू नेता जयदीप गौड़ की सक्रियता से पकड़ाया- लव जेहादी

उज्जैन रेल्वे स्टेशन पर हिन्दू संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा हिन्दू समाज की लड़की को बहला फुसलाकर अपने साथ अजमेर ले जा रहे आसिफ शेख को पकड़कर लव जेहाद का मामला दर्ज कराया गया।

सिमरोल के परिवार की एक हिन्दू लड़की को बहला फुसला कर धर्म परिवर्तन कराने अजमेर ले जा रहे लव जेहादी मुस्लिक युवक को हिंदू समाज के कार्यकर्ताओं ने रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में बैठते ही पकड़ लिया और लड़की को परिवार के सुपुर्द कर लव जेहाद का मामला दर्ज किया गया। उपरोक्त मामले की जानकारी पूर्व छात्र नेता एडवोकेट जयदीप सिंह गौड़ को सबसे पहले मिली। तत्काल इस मामले को गम्भीरता से लेते हुये एडवोकेट जयदीप सिंह गौड़ ने अपने मित्रों और हिन्दू समाज के कार्यकर्ताओं को सूचना देकर लव जेहादी को घेरने की योजना बनाई। एडवोकेट जयदीप गौड़ की जागरूकता व सक्रियता से एक हिन्दू परिवार की बेटी आज सुरक्षित घर पहुंची।

इस मामले पर जानकारी देते हुये एडवोकेट जयदीप सिंह गौड़ ने कहा कि हिन्दू परिवारों को व उनकी लड़कियों को लव जेहाद के षडयंत्र की जानकारी देने की आवश्यकता है, ताकि हिन्दू परिवार जागरूक रहे और बेटियाँ सुरक्षित रहें।

फैशन के नाम पर जिहाद, रोटी से बालों तक पहुँचा...

मशहूर हेयर स्टाइलिस्ट जावेद हबीब का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें वह एक महिला के बालों में थूकते हुए उसकी खूबी बता रहे हैं। यह वीडियो मुजफ्फरनगर में एक शो का बताया जा रहा है। वहां तीन दिन पहले जावेद हबीब ने होटल में एक वर्कशॉप में डेमोस्ट्रेशन दिया था। वीडियो में जावेद हबीब बालों के रखरखाव के बारे में बता रहे हैं और शैंपू का महत्व बताते हुए वह महिला के बालों में थूकते हुए कहते हैं कि इसमें जान है।

बालों के रखरखाव को लेकर होटल किंग विला में एक सेमिनार का आयोजन किया गया था। उस दौरान जावेद हबीब एक महिला को बता रहे हैं कि उसके बाल गंदे हैं। फिर कहते हैं कि बाल गंदे हैं क्योंकि शैंपू नहीं किया। इसके बाद वह महिला के बालों में कंघी करते हुए कहते हैं कि अगर बालों में पानी की कमी है? इतने में वह महिला के बालों में थूकते हैं और कहते हैं कि थूक में जान है।

जावेद हबीब की इस हरकत पर लोग जमकर नाराजगी जता रहे हैं। कोरोना के मामलों को देखते हुए कड़ी कार्रवाई की भी मांग कर रहे हैं।

अखिल भारतीय सेन समाज इस मामले में एकजुट हुआ और इस घटना को हिंदू समाज पर धब्बा बताकर प्रतिकार किया, जावेद हबीब के पुतलों की पिटाई की गई और उसके थूकने वाली घटना पर तुरन्त हिंदू समाज से माफी मांगने का आदेश दिया जिसे जावेद हबीब ने स्वीकार कर कहा कि मेरी इस घटना से किसी को ठेस पहुँची हो तो मैं सर झुका कर माफी मागता हूँ और भविष्य में किसी के बालों में नहीं थूकूंगा।

पुस्तक परिचय

अरूण सपकाले

'हिन्दुत्व' यह शब्द अपने आप में अनेक अर्थ समेटे हुए एक परिपूर्ण शब्द हैं। अनेक दृष्टिकोणों से हिन्दुत्व को देखा व समझा जा सकता है। हिन्दुत्व पर अनेक अभ्यासपूर्ण पुस्तकें लिखी गई हैं। अनेक प्रकार से हिन्दुत्व की व्याख्या भी की गई है। इसी क्रम में, अत्यंत सरल भाषा में हिन्दुत्व के विभिन्न आयामों को समझाने के लिए दिल्ली के सुरुचि प्रकाशन ने एक पुस्तिका प्रकाशित की है, 'हिन्दुत्व - विभिन्न पहलू, सरलता से..!' प्रशांत पोळ द्वारा लिखी गई इस पुस्तक का विमोचन, गत दिनों राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प. पू. सरसंघचालक डॉ मोहन भागवत जी द्वारा जबलपुर में किया गया।

इस पुस्तिका में 'हिन्दुत्व' शब्द की प्राचीनता, उसका महत्व, इतिहास आदि विस्तार से बताया गया है। 'हम हिन्दू किसे कहेंगे?', 'संगठित हिन्दू समाज', 'समरस हिन्दू', 'राष्ट्र सर्वप्रथम', 'आडंबर की उपासना', 'हिन्दुत्व का तेजस्वी पुनर्जागरण' आदि अध्यायों के द्वारा हिन्दुत्व के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के लिखे अनेक अंश अत्यंत प्रेरक हैं। उदाहरण के लिए- 'प्राचीन काल में, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक इन सभी क्षेत्रों में समता का तत्व, सामाजिक मूल्य के रूप में प्रस्थापित था। इसका अनुसरण कर, समाज एकरस, एकरूप हुआ था और इसीलिए उस समय हिन्दू समाज, दुनिया का सबसे बलशाली समाज माना जाता था'।(समरस हिन्दू -चौथा अध्याय)

'हमारे प्राचीन काल में हमारे ऋषि, मुनि, संतों ने एक समरस हिन्दू समाज का निर्माण किया, जिसके कारण हम विश्व के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र बने लेकिन इस सामर्थ्य के पीछे एक और बड़ा कारण था - हमारी राष्ट्रनिष्ठा। हमारे पुराणों में भी राष्ट्र भावना जागृत करने वाले अनेक उल्लेख हैं 'विष्णु पुराण' में लिखा है, सहस्त्र जन्मों के बाद भारतवर्ष में जन्म मिलता हैं और यहाँ जन्म लिये लोगों को ही स्वर्ग और मोक्ष प्राप्त होते हैं।

'दुर्लभम भारते जन्म, मानुष्यन तत्र दुर्लभम।

'ब्रह्मपुराण' का 27 वा अध्याय तो 'भारतवर्षानुकीर्तनम' इसी नाम से प्रसिध्द है इसमें लिखा है, 'जो नरश्रेष्ठ भारत में जन्म लेते हैं, वह धन्य हैं देवों को भी इस भूमि में जन्म लेने की तीव्र इच्छा रहती है इस भारतभूमि के सभी गुणों का वर्णन करना किसे संभव हैं..?' 'वायु पुराण' में भी इसी आशय का वर्णन आता है'।(राष्ट्र सर्वप्रथम - पाँचवाँ अध्याय)

'जब हम संगठित थे, समरस थे, तब दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्र थे। दुनिया के सबसे संपन्न, सबसे धनवान राष्ट्र थे। जैसे ही हमारे सामाजिक धागे कमजोर होते गए, सामाजिक रूप से हम बिखरते गए मुस्लिम आक्रांताओं के हाथों और बाद में अंग्रेजों के द्वारा

हम परास्त होते गए, हमारी संगठित शक्ति की ताकत ही हम भूल गए थे। किन्तु अब नहीं विश्व का हिन्दू समाज अब संगठित हो रहा है यह संगठित शक्ति, विश्व के लिए एक शुभ संकेत है, सहिष्णु, सामर्थ्यवान संवेदनशील हिन्दू समाज विश्व की भलाई के लिए काम करेगा, यह तय हैं और इसीलिए, दुनिया विभिन्न क्षेत्रों से लोगों का 'हिंदुत्व' के प्रति आकर्षण बढ़ रहा हैं।' (विजय पर्व का शंखनाद -दसवां अध्याय)

रु. 62 मूल्य की इस पुस्तिका में, हिन्दुत्व के संबंध में महत्व की जानकारी प्रत्येक अध्याय में दी गई है। हिन्दुत्व को संक्षेप में और सरलता से समझने के लिए, यह पुस्तक निश्चित रूप से मदद करेगी।

स्मरणीय विभूतियाँ

आचार्य गिरिराज किशोर
राजपथ से रामपथ पर
जयंती : ४ फरवरी

पं. दीनदयाल उपाध्याय
एकात्ममानववाद के प्रणेता
पुण्य तिथि : ११ फरवरी

स्वामी दयानंद सरस्वती
समाज सुधारक
जयंती : १२ फरवरी

ठाकुर रामसिंह
इतिहास पुरुष
जयंती : १५ फरवरी

रामकृष्ण परमहंस
आध्यात्मिक गुरु
जयंती : १८ फरवरी

छत्रपति शिवाजी महाराज
युग पुरुष
जयंती : १९ फरवरी

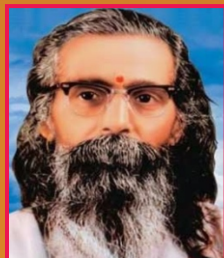

माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर 'गुरुजी'
तपस्वी जीवन
जयंती : १९ फरवरी

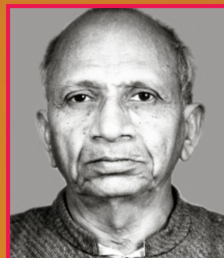

माधवराव बनहट्टी
वैश्विक समन्वयक
जयंती : १९ फरवरी

विनायक दामोदर सावरकर
स्वातंत्र्य वीर
पुण्यतिथि : २६ फरवरी

संत रविदास
समाज सुधारक
जयंती : २७ फरवरी

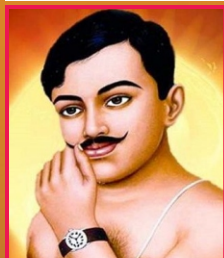

चंद्रशेखर आजाद
प्रसिद्ध क्रांतिकारी
बलिदान दिवस : २७ फरवरी

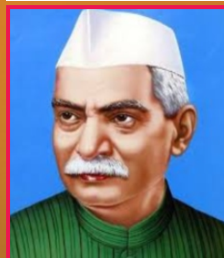

भारतरत्न डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
भारत के प्रथम राष्ट्रपति
पुण्यतिथि : २८ फरवरी

मार्च माह के मुख्य व्रत, त्यौहार एवं दिवस

ता. ०१ महाशिवरात्रि
ता. १७ होलिका दहन
ता. १८ बसंत धुलेंडी
ता. २० माँ संत तुकाराज जयंती
ता. २० रानी अवन्ति बाई लोधी जयंती
ता. २२ रंगपचंमी
ता. २३ भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरू शहीद दिवस
ता. २४ विश्व क्षयरोग दिवस

बुक-पोस्ट
जाग्रत मालवा
प्रति,

स्वामी- विश्व संवाद केन्द्र के लिए प्रकाशक और मुद्रक दिनेश गुप्ता द्वारा मुद्राकंण ऑफसेट ए-11/डी, पोलोग्राउन्ड इन्दौर म.प्र. से मुद्रित एवं 72, नारायण बाग, जी-1, केसरदीप एवेन्यु इन्दौर म.प्र. से प्रकाशित। संपादक अरूण सपकाले फोन नं. 0731 -3551341